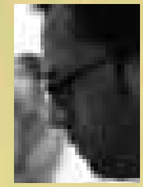
मंच पर सीखना

cPpksa ds fy, fFk;sVj dk;Z'kkyk



–अभिषेक गोस्वामी

थियेटर कार्यशाला बच्चों को एक ऐसा मंच प्रदान करती है जहाँ बच्चे अपने नियंत्रित शैक्षिक ढाँचे से बाहर आकर अपने समग्र विकास के लिए विभिन्न क्षमताओं की खोज करते हैं।

कई लोग मानते हैं कि बच्चों को मुक्त एवं स्वतं त्र विचारक के रूप में विकसित करने के लिए स्कूल सही माहौल मुहैया नहीं करा रहे हैं। इसके विपरीत वे प्रतिस्पर्धा तथा सामाजिक विभाजन को प्रोत्साहित करते हैं और बच्चों को इस बात का विश्वास दिलाते हैं कि किसी की सफलता का अर्थ है दूसरे की विफलता। इसके कारण बच्चों में मौजूद स्वाभाविकता और सहजता मर जाती है और एक नियंत्रित सा दिमाग विकसित होने लगता है।

इस नियंत्रित प्रणाली से दूर हटने के लिए कई लोगों ने स्कूली शिक्षा में ऐसे अभिनव तरीकों का उपयोग करने की कोशिश की है जो बच्चों में सामाजिक एकीकरण लाने में योगदान दे सकें जो उनके स्वाभाविक विकास के लिए जरूरी है।

स्वयं की खोज के लिए थियेटर कार्यशाला एक ऐसा ही अभिनव तरीका है जो बच्चों को एक ऐसा मंच प्रदान करता है जहाँ बच्चे अपने नियंत्रित शैक्षिक ढाँचे से बाहर आकर अपने समग्र विकास के लिए विभिन्न क्षमताओं की खोज करते हैं।

जीवन की खोज करने एवं अपने तथा आसपास के वातावरण के बीच के सम्बन्ध का पता लगाने के लिए नाटक एक सफल माध्यम है। यह प्रक्रिया सामाजिक विभाजन और विषयों से परे जाकर बच्चों और उनके विकास की जरूरतों पर ध्यान केन्द्रित करती है।

थियेटर प्रक्रिया का समग्र लक्ष्य है विभिन्न पृष्ठभूमियों के बच्चों में सकारात्मक आत्म–अवधारणा को बढ़ावा देना। इसके लिए उन्हें अभिनय–कौशल प्राप्त करके विभिन्न भूमिकाएँ निभाने के माध्यम से जीवन की खोज करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। एक कल्पनाशील खोज में ये बातें शामिल होती हैं–एक नाटकीय स्थिति पैदा करना, उसका अभिनय करना, उसके भीतर संवाद करना और उसके परिणाम के बारे में सोचना। ये 'अभिनय करने' के द्वारा होने वाले अनुभव को रूप और अर्थ देकर व्यक्ति की इस बात में मदद करते हैं कि वह भावनात्मक, शारीरिक, कल्पनाशीलता, सौन्दर्यपरकता एवं सामाजिक रूप से विकसित हो सके।

इससे सकारात्मक समूह–अन्त:क्रिया को भी बढ़ावा मिलता है क्योंकि साझे लक्ष्य को पाने के क्रम में बच्चे एक–दूसरे के साथ समायोजन करना सीखते हैं। इस प्रकार यह पूरी प्रक्रिया न केवल आत्म–विकास का मार्ग प्रशस्त करती है वरन समूह के विकास के लिए सामाजीकरण की प्रक्रिया को भी आगे ले जाती है।

इसके अलावा नाटक और थियेटर में विकास करने का अर्थ है बच्चों का स्वाभाविक विकास होना और यह विकास एक ऐसे वातावरण में होता है जो गैर प्रतिस्पर्धात्मक, सहकारी, सहायक, हर्षपूर्ण लेकिन फिर भी चुनौतीपूर्ण होता है।

इससे बच्चे जीवन की चुनौतियों का सामना एक मानवीय और रचनात्मक तरीके से करना सीखते हैं जिससे उनका जीवन समृद्ध होता है।

अज़ीम प्रेमजी संस्थान, जयपुर ने 9 से 15 वर्ष के बच्चों के लिए मई–जून 2012 में 24 दिवसीय थियेटर और नाटक कार्यशाला का आयोजन किया।

इस कार्यशाला का उद्देश्य था समाज के विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों में नाटक, थियेटर की गतिविधियों एवं सम्बद्ध कलाओं के माध्यम से सकारात्मक सामाजिक सम्बन्ध एवं समन्वय बढ़ाना।

कार्यशाला के पूरे कार्यकाल के दौरान बच्चों को अपने, अपने परिवार, अपनी शिक्षा प्रणाली और उस समाज के प्रति संवेदनशील बनाना था जिसमें वे रहते हैं।

17 जून 2012 को कार्यशाला का समापन बहुत अनौपचारिक तरीके से हुआ। कार्यशाला में भाग लेने वाले बच्चों के माता–पिता ने चार लघु नाटक देखे जिन्हें बच्चों ने ही विकसित किया, उन्होंने खुद ही रिहर्सल की और उसमें अभिनय भी किया। इन नाटकों के मुख्य विषय के रूप में बच्चों ने चार अलग–अलग लोक कथाएँ चुनीं। कार्यशाला के अन्तिम दिन एक प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसमें बच्चों द्वारा लिखे हुए खोजपूर्ण लेख एवं कार्यशाला के दौरान बनाए गए चित्र रखे गए। इस प्रक्रिया–उन्मुख नाटक एवं थियेटर कार्यशाला में भाग लेने वाले बच्चों को जो कुछ प्राप्त हुआ उसे नीचे चित्रों के एक सेट तथा कार्यशाला के सार संक्षेप के रूप में प्रस्तुत किया गया है–

- सकारात्मक एवं यथार्थवादी आत्म–छवि
- आत्म–अनुशासन एवं आत्मविश्वास
- ध्यान केन्द्रित करने की योग्यता

- शारीरिक एवं वाचिक योग्यता का विस्तार
- समस्याओं को सुलझाने के रचनात्मक एवं कल्पनाशील तरीके
- भावनाओं को व्यक्त एवं नियंत्रित करने की क्षमता
- लोगों, परिस्थितियों एवं वातावरण का प्रखर अवलोकन
- संवेदी जानकारी को याद करके उपयोग में लाने की क्षमता
- सुविचारित निर्णय लेने, उनके अनुसार काम करने एवं परिणामों को स्वीकार करने की क्षमता
- व्यक्तिगत रूप से तथा समूह के प्रति जिम्मेदारी एवं प्रतिबद्धता की भावना
- किसी काम का बेहतर तरीके से आरम्भ करना, उसे व्यवस्थित करना और फिर प्रस्तुत करना
- जाँच–पड़ताल की भावना का विकास एवं सीखने की प्रतिबद्धता
- समूह–प्रक्रिया में प्रभावी एवं रचनात्मक ढंग से योगदान देने की क्षमता
- दूसरों को समझने, उन्हें स्वीकार करने एवं उनके प्रति समानुभूति की भावना का विस्तार
- दूसरों का सम्मान करना–उनकी भावनाओं, विचारों, क्षमताओं एवं मतभेदों का आदर करना
- रचनात्मक समालोचना करना, उसे स्वीकार करना एवं उस पर चिन्तन करना

बच्चों के द्वारा खेल के माध्यम से एक न्यायसंगत, निष्पक्ष, संवेदनशील और सतत मानवीय समाज के अभिनय की रिहर्सल



1 2 **थियेटर अभ्यास**

3 4 **बेहतरी के लिए तात्कालिक उपाय**

6 **विचारों को साझा करना**

7 8 **ड्रॉइंग व पेन्टिंग**

9 10 **ग्रीष्मकालीन कार्यशाला में माता–पिता की भागीदारी एवं नाटक प्रक्रिया पर बच्चों व माता–पिता का संयुक्त चिन्तन**

अभिषेक गोस्वामी *अज़ीम प्रेमजी संस्थान, जयपुर के शिक्षा में थियेटर तथा नाटक विभाग में एक संसाधक के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में संकाय के सदस्य के रूप में काम किया है। उन्होंने विविध पृष्ठभूमि वाले बच्चों और शिक्षक समूहों के साथ शिक्षा–अभ्यासों में थियेटर और नाटक विषय पर एक अभिनेता, डिजाइनर, निर्देशक और सुगमकर्ता के रूप में भारत, चीन और सल्तनत ऑफ ओमान में विभिन्न रूपों में अपनी रचनात्मक क्षमताओं की सेवा प्रदान की है। उनसे abhishek.goswami@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवाद:*** *नलिनी रावल*